आखिर राईनर से ऐसी कौन सी गलती हो गई थी!

एक दिन टेलीविजन के एक चैनल पर एक प्रोग्राम आ रहा था।उसका विषय था तलाक।तलाक के बाद तलाकसुदा फिर से अपने जीवन को अपने हॉथों मे लेकर उसे जीने का प्रयास करते हैं।यहॉ मै एक बात जो देख रहा था,वो ये थाःऔरतें तलाक के बाद ठीक वहीं से अपना जीवन शुरू कर लेती हैं,पर मर्द अपना जीवन फिर प्रारम्भ से शुरू करना चाहते हैं।औरतें जितनी जल्दी अपने अतीत को अल्विदा कह देती है,वो मर्दो के वश का नही होता है।तलाक के बाद ज्यादेतर मर्दो को ही टूटते देखा जाता है।इस प्रोग्राम मे एक दृश्य आयाःकाम के बाद एक तलाकसुदा बाप अपने मकान मे आता है।जिस फ्लोर मे बेटियों के बिखराये खिलौनो की वजह से तिल रखने तक कि जगह न होती थी,बिल्कुल खाली होता है।एक बार उसका बसा बसाया परिवार उसके ऑखों के सामने तिर जाता है।सामानो की वजह से उसे अपने चार कमरे का मकान भी तंग लगा करता था।अब उसके सारे कमरे खाली पड़े थे।उसके ड्राईन्गरूम मे फर्श पर एक गद्दा,एक टूटी कुर्सी और बस एक मेज थी।एक कोने मे कुछ खाकी कार्टोन्स गंजे पड़े थे,जो उसके बेटियों के दिये प्रेजेन्टों से भरे पड़े थे।एक विशेष उम्र मे उसकी बेटियों को रास्ते पर पड़े हर कचरे ही मूल्यवान लगते थे।वो उन्हे उठा कर घर ले आती थीं ओर अपने पापा को पकड़ा देती थीं।उसे अपने जन्मदिन पर उनसे उनकी इतनी चित्रकारियॉ मिलती थी कि उसका आधा दिन उन्हे देखने मे बित जाता था।उसने अपनी बेटियों का दिया एक एक सामान सहेज कर रखा था,यहॉ तक कि उनका दिया सायकल का पहिया भी,जो बिना टायर टयूब के था।जब वो इस पहिये को अपने हॉथ मे लेकर फूट फूट कर रोना शुरू कर देता है।मुझे उठ कर टेलीविजन बन्द करना पड़ गया।ऐसा न था कि मुझे उससे कोई सहानुभूति नही थी।दरअसल मुझे अब राईनर से कोई सहानुभूति न रह गई थी।

जब उसका और गावी का तलाक हुआ था,तब मै सारे दोष गावी पर ही मढा करता थाः

घर टूटने की दूसरी वजहें भी होती है,पर ज्यादेतर दोष शराब पर ही मढा जाता है।राईनर ये जानते हुए भी शराब मे एक बार फिर से डूब चुका था।खोने को तो वो सब कुछ खो चुका था,पर अभीं भी उसके सर पर एक छत थी,एक नौकरी थी और बचा खुचा स्वास्थ्य और जीवन था।ये शराब सबसे पहले उससे उसकी नौकरी लेगी फिर उसके सर से छत फिर अन्त मे उसका स्वास्थ्य फिर उसका जीवन।इस प्रक्रिया मे कितना समय लगेगा,ये बस ऊपर वाला ही जानता था।

गावी ने उसे बीस वर्षो तक झेला।फिर उसे एक निर्णय लेना पड़ा।उसने राईनर के चार कमरे के मकान को अल्विदा कहा और मुश्किल से सौ मीटर दूर एक दो कमरे के मकान मे चली गई।बड़ी बेटी सिमोने ने भी अपने पिता को अल्विदा कहा।वो सोलह वर्ष की हो चली थी।छोटी बेटी अपने मॉ के संग न गई और अपने पिता के संग पुराने मकान मे ही रह गई।आस पड़ोस के लोग एक बार चौंके तो अवश्य,पर ये उनका निजी मामला न था।बहरहाल ये एक अजीब तरह का अलगाव था।

कभीं कभार राईनर अपनी बेटी सान्द्रा के साथ मुझे सड़कों पर दिखता था।कद मे वो अपने बाप को तो कब का पीछे छोड़ गई थी।दूर से तो वो एक भरे बदन की विकसित औरत ही दिखती थी गोकि वो महज चौदह वर्ष की थी जो उसके चेहरे के भोलेपन मे देखा जा सकता था।

जब मै इस मकान मे आया तो सिमोने छ वर्ष और सान्द्रा चार वर्ष की थी।ये परिवार मेरे मकान के ठीक ऊपर दूसरी मंजिल पर रह रहा था।राई नर और गावी मेरी ही उम्र के थे।पहली मुलाकात मे ही इनके संग मै आप से तुम पर आ गया।इन्होने मुझे एक अच्छे पड़ोसी के रूप मे स्वीकार कर लिया और मै भी इन्हे।पर कुछ ही मुलाकातों के बाद पता नही क्यों मुझे ऐसा लगा कि इस परिवार की सारी खुशियॉ कृतिम है।यहॉ की रोशनियॉ कहीं और तो साये कहीं और हैं।

गावी के पास कोई नौकरी न थी।वो घर पर रह कर अपनी बेटियों की देख भाल मे लगी रहती थी।अपनी बेटियों को तो वो राजकुमारियों की तरह सजाये रखती थी।राईनर मेरिंगडाम के एक सरकारी कब्रगाह मे एक मामूली सा माली था।पता नही उसे महीने के कितने पैसे मिलते थे,पर इस परिवार मे मुझे पैसों का कोई अभाव न दिखता था।जरूरत की सारी चीजें इनके पास थीं।

गर्मी के दिनो में मै जब काम से वापस घर आता था तो ये सभी मुझे सामने के होफ मे ही मिलते थे।राईनर भी काम से तीन बजे के आसपास वापस घर आ जाता था।आरामकुर्सियों पर राईनर और गावी लेटे रहते थे।एक छोटे से घेरे मे इनके पाले चार खरगोश फूदकते रहते थे।बगल मे ही एक छोटा सा टेन्ट तना रहता था जिसमे इनकी बेटियॉ खेलती रहती थी।इनका विकएन्ड तो जैसे होफ मे ही गुजरता था।

जब मेरी छुट्टियॉ चलती होती थीं तब मै अक्सर देखा करता था कि इनकी बेटियॉ अपने स्कूल से अपने भारी रूक्जाक ढोए अपने छोटे छोटे पग भरते घर वापस आती थी।इन्हे देखते ही गावी दौड़े भागे जाती थी और इनसे उनके रूक्जाक लेकर अपने कन्धे पर लटका लेती थी।

जब तब पूरा परिवार एक साथ बाहर घूमने निकलता था।सभी सजे धजे बने संवरे।राईनर अपने कन्धे जरा झटक के चलता था।बड़ा गर्वान्वित बाप था वो।और होता भी क्यों नही!गावी ने वाकई उसे दो चॉद जैसी बेटियॉ सौंप रखी थी।सिमोने सुन्दर है अथवा सान्द्रा,कहना बड़ा मुश्किल था।दोनो मे बस एक साम्य न था।सिमोने स्वभाव से बेहद शान्त थी और सान्द्रा बेहद चंचल।सिमोने पूछने पर ही कुछ बताती थी और सान्द्रा से कुछ पूछना न पड़ता था।वो खुद ही शुरू हो जाती थी।

एक बार अचानक मेरी नज़र सिमोने के हॉथों पर पड़ी।ऊपर की पूरी चमड़ी उतरी हुई थी।पूछने पर पता चला कि उसे नोयेरोडेर्माटिटिस की बीमारी है जो हर तरह के इलाजों के बावजूद भी रोकथाम के बाहर है।बड़े से बड़े एक्सपर्टो और प्रोफेसरों के पास भी इसका कोई इलाज नही है।बस एक ही आसरा उसके मॉ बाप को था कि शायद जब वो जवान हो जाएगी तो उसे इस बीमारी से मुक्ति मिल जाएगी।

गावी एक गेलर्नेटे फ्रिजयोजिन अर्थात नाईन थी।अपने बालों का तो वो ख्याल रखती ही थी,अपनी बेटियों और अपने पति के पीछे भी कैची और कन्घी लिए दिन रात खड़ी रहती थी।राईनर की दाढी हमेशा करीने से ट्रीम की हुई दिखती थी।

इनके मकान से करीब करीब रोजाना ही मुझे वैक्यूम क्लीनर के चलने की आवाजें आती थी।गावी हर दिन ही अपने मकान के कमरों मे बिछीं दरियॉ साफ करती थी।उसे सफाई से कुछ ज्यादे ही लगाव था।खुटपुट राईनर भी करता होता था।बेटियों की फर्मायश हुई नही कि वो उनके लिए लकड़ियों के खिलौने बनाने मे जुट जाता था।

इनके संग एक बार मै बेगोनियन प्लात्स के पार्क मे शायद दस मिनट बैठा था जो हमारे घरों के पास ही था।इनकी बेटियॉ पार्क मे खेल रही थी और ये दोनो एक बेंच पर साथ साथ बैठे उनका खेलना देख रहे थे।मै मिखाएल की दुकान से सिगरेट का एक पैकेट खरीद कर घर वापस लौट रहा था।ये मेरी इनके साथ पहली शाम थी।एक बीयर भी मैने राईनर के साथ पी और दो चार सिगरेटें भी फूँकीं।ठीक हमारे बैंन्च के सामने पार्क

के दूसरी तरफ गावी के माता पिता का पहली मंजिल पर मकान था। उनके बालकोनी की दीवार पर किसी रथ का एक चक्का टंगा पड़ा था।
राईनर की शराब जैसे प्रकोपी देवता से ऑख मिचौनी चल रही है. ये मुझसे छुपा न था पर उसे बहकते मैने कभीं न देखा। समय के साथ मै ये भी भॉप चुका था कि राईनर चलते वक्त अपना कन्धा इस वजह से उचकाता है क्योंकि उसे अपने लड़खड़ाते कदम साधने होते हैं।
कलह या झगड़ा मैने इस परिवार मे न मैने कभीं देखा और न सुना पर सिमोने और सान्द्रा कुछ ज्यादे ही चुप रहने लगी थीं। मिल जाने पर गावी और राईनर भी जल्दी का बहाना बना कर सरक लेते थे।
पर इस परिवार का विघटन इतना करीब आ चुका है ये मैने सपने मे भी नही सोचा था।
शनिवार का दिन था। दिन के यही करीव एक वज रहे थे। मै अपना धोबीघाट फैलाए कपड़ों पर आयरन किये जा रहा था कि अचानक मेरे दरवाजे की कौलबेल घनघनाई। कीहोल से बाहर देखा. दरवाजे पर राईनर खड़ा था। फटाफट मैने दरवाजा खोला
ःगावी ये मकान छोड़ कर एक दूसरे मकान मे जा रही है। एक सोने वाला सोफा हमारे वश का नही है। तुम मेरी थोड़ी मदद कर सकते हो!
ःहॉ क्यों नही!मै भागा अपने जूते पहनने लगा। दो मिनट मुझे लगे होंगे जूते पहनने मे। ये भारी सोफा मै राईनर और गावी के साथ उठा कर नीचे ले आया. एक गाड़ी मे घुसड़वाया और गावी को वापस भेज कर राईनर के साथ गावी के नए मकान तक जा पहुँचा। गावी के दो कमरे का मकान जो तीसरी मंजिल पर था. मुझे अन्दर से बेहद आरामदेह लगा।
मै राईनर के साथ गई शाम तक गावी और सिमोने के सामान फ्रोनहोफर पहुँचाता रहा। न तो मुझे राईनर असहज दिखा और न गावी ही। बस बच्चे उदास दिखे. जो अपनी मॉ के साथ अपने सामानो के बॅटवारे मे लगे थे। राईनर और गावी के बीच घर के सामानों का बॅटवारा शायद पहले से ही तय हो चुका था फिर राईनर को एक और बात का दिलासा था कि उसकी छोटी बेटी को तो उसी के संग रहना है और गावी के संग सिमोने रह ही रही है। ये दो पाट कभीं एक दूसरे के लिए अंजान हो ही नही सकते. जब तक कि इनके बीच ये दो सेतू हैं। उसने कुछ नही खोया है।
एक तूफान आया और चला गया। राईनर को भी व्यवस्थित होने मे ज्यादे समय न लगा। एक परिवार टूटने के बावजूद भी एक दूसरे के सम्पर्क मे रहा। राईनर सान्द्रा के संग जाकर गावी से मिलता रहा और गावी भी सिमोने को लेकर राईनर के पास आती रही।
कभीं कभीं मुझे लगता था कि गावी राईनर को माफ करके उसके पास फिर वापस आ जाएगी और इस परिवार की खुशियॉ दुवारा वापस लौट जाएँगी। सिमोने और राईनर के चेहरे का भाव पढना सरल न था पर गावी और सान्द्रा हँसमुख स्वभाव की होते हुए भी अपनी उदासियॉ न छुपा पाती थीं।
दो ही महीने गुजरे थे कि सान्द्रा अपने मॉ के संग रहने की जिद करने लग पड़ी। उसे अपनी बहन की याद सताने लगी। स्वभाव का राईनर भावुक तो था ही. उससे अपनी बेटी की उदासी न देखी गई और वो मेरे पास मदद मॉगने आ पहुँचा। पर सान्द्रा से विदा लेना उसके लिए इतना सरल न था। वो ज्योंही सान्द्रा के किसी सामान को हॉथ लगाता था. उसकी ऑखें भर आती थी। देखते ही देखते सान्द्रा का भी कमरा खाली हो गया। बस एक सामान इस कमरे मे रह गया और वो था सान्द्रा का ऊँचा बेड. जो राईनर ने अपने हॉथों से बनाया था। ये किसी दूसरे तीसरे मकान मे रखा ही न जा सकता था। माप से बनाया गया ये बेड खोलने के बाद बस लकड़ियों का एक ढेर था। जब दो साल पहले राईनर ये बेड बनाया था तो मुझे नीचे बुलाने आया था। बने बेड को देख कर मै दंग रह गया था। लगता था जैसे उसे किसी दक्ष बढई ने बनाया हो। मजबूत सीढियॉ. सिरहाने किताबों के लिए एक छोटी सी आलमारी. दो लैम्प्स. बेड के नीचे पढने की एक मेज। पता नही उसने इनमे कितने पैसे जाया किये!मुझे बस इतना पता है कि उसने इनमे अपने पूरे वर्ष की छुट्टियॉ जाया की थीं और मेरा अपने मकान मे सोना बैठना हराम हो गया था। सुबह से लेकर गई रात तक मै उसकी खुटपुट सुनता रहता था।
राईनर के चार कमरों का मकान एक तरह से खाली हो चला था और गावी के दो कमरों का मकान खचाखच भर चला था।
अव अक्सर मुझे मकान की सीढियों पर राईनर नशे मे धुत्त ही मिलता था। उससे अपना हालचाल तक न बताया जाता था। काम से ही चढा के आता था फिर घर आते ही पीने बैठ जाता था। कई बार वो सीढियों पर गिरा भी। मै उसकी मदद को दौड़ा. पर वो इन्कार कर गया।
मेरे मकान मे राईनर के अलावे और पॉच परिवार रहते थे। किसी भी परिवार से उसका पीना न छुपा था. पर वो न किसी को कोई अपशव्द कहता था और न ही कभीं किसी का दरवाजा ही खटखटाता था। न कभीं उसकी आवाज तेज होती थी और न तो कभीं उसका व्यवहार ही भद्दा होता था।
ऐसे ही समय गुजरता रहाः
इसी दरम्यान मेरा ध्यान एक दूसरे परिवार पर गयाः
होफ के दाहिने ब्लॉक के बिल्कुल आखिरी वाले मकान मे भी एक परिवार रहता था। बच्चियों का नाम तो मै न जान पाया पर उनकी मॉ का नाम विरगिट था। उसके पति और उसकी वेटियों को देखे मुझे सप्ताहों हो चले थे. पर विरगिट से मेरी मुलाकात रोज ही गेरानियनस्ट्रासे के नुक्कड़ पर होती थी। सुबह सात बज के दस मिनट पर वो अपने मरियल से कुत्ते को घूमाने के लिए बाहर निकलती थी। ठीक इसी वक्त मै काम पर जाने के लिए अपना मकान छोड़ता था। मै कई बार सोचा कि उससे उसके पति और वेटियों के बारे मे पूछूँ फिर पता नही क्या सोच कर टाल जाता था।
इस परिवार से मेरा परिचय राईनर और गावी ने ही वर्षो पहले करवाया था। जब मै काम से वापस घर आता था तो गावी और विरगिट दो सहेलियों की तरह एक बैंच पर बैठी सिगरेटे फूँकतीं मिलती थीं। विरगिट के अधेड़ मॉ बाप बगल वाली बैंच पर बैठे अपने दामाद का राईनर से टेबल टेनिश मे हारना देखते रहते थे। सान्द्रा और सिमोने विरगिट की वेटियों के साथ होफ मे खेलती होती थी जो उनसे उम्र मे यही कोई दो वर्ष छोटी रही होंगी। टेवल टेनिश से जरा हटकर ही एक प्लास्टिक के चौकोर बक्शे मे बीयर पहाड़ की तरह सजा रहता था। पास मे ही एक डस्टबीन होती थी जो वीयर के खाली डिब्बों से भरी रहती थी।
विरगिट के पति स्टीव और राईनर के बीच जम के दोस्ती छन रही थी। राईनर ने एक खटारा गाड़ी ले रखी थी जो रोज ही अपना मरम्मत मॉगती थी। स्टीव गोकि पेशे का डाकिया था. पर उसे गाड़ियों के मरम्मत का काम आता था। चिट्ठी पतरी बॉट वूँट कर वो राईनर की गाड़ी के नीचे सरक लेता था। कालिखों से सना वो वाहर आता था फिर चल पड़ता था अपने मकान की ओर अपना हॉथ मुँह साफ करने। उसने राईनर से कभीं एक पाई तक न मॉगा। ऐसी विरल दोस्ती बर्लिन मे तो दुर्लभ ही कही जा सकती थी। रूप रंग का वो जैसा भी रहा हो. पर दिल और जेव का वो दिलदार और यारों का यार था।

स्टीव के कई दोस्त भी उससे रोज ही मिलने आते थे।टेबल टेनिश खेलने एक डेटलेफ नाम का भी व्यक्ति आता था।वो भी होफ के दाहिनी ब्लॉक मे रहता था।वो शादीसुदा तो न था पर उसे मै आए दिन ही नई नई लड़कियों के साथ देखता था जिनकी उम्र मुझे ज्यादे न लगती थी।
एक बार राईनर ने ही मुझे कभीं बताया था कि डेटलेफ जर्मन पोस्ट मे गज़टेट ऑफिसर है।अनाप शनाप पैसे हैं साले के पास।कहता है बिबियों से कहीं बहुत सस्ती तो रंडियॉ होती है।सधा सधाया दाम लेती हैं और हर इच्छा पूरी करके चली जाती हैं।उन्हे जैसे कुचलना है कुचलो.पर जाने से पहले ऑसुओं से भरे ऑखो से ये पूछ ही जाती हैःअब मुझे फिर कब बुलाओगे मेरे प्यारे डेटलेफ।और ये बिबियॉ.देना वेना तो इन्हे कुछ होता नही है।इनके मुझे खर्चे ही खर्चे दिखते हैं।कुछ मॉगो तो बच्चों को सामने करके अपने दिन भर की राम कहानी सुनाने लग पड़ती हैं।अगर कुछ देना हुआ तो पसर जाती हैं।उलटना पलटना तक इन्हे नही आता।
ःपता है तुम्हे स्टीव को डाकिये का काम कैसे मिल पाया!
ःकैसे!
ःबिरगिट की बदौलत।बिरगिट देखने मे भले जैसे भी हो.पर बिस्तर पर वो एक एक चिथड़ा उधेड़ कर रख देती है.एक भूखी शेरनी की तरह।खून का एक एक बूॅद चूस लेती है।तीन दिन बिस्तर से उठा तक नही जाता।
राईनर अपनी दॉई ऑख के कोने से मुस्कराया।मुझे उससे ज्यादे सवाल न करने पड़े।
अजीब सी दोस्ती थी इस होफ की।अचानक एक परिवार किसी दूसरे परिवार के सन्सर्ग मे आता था और एक दूसरे से इतना घूल मिल जाता था कि इनका उठना बैठना.घूमना फिरना सब कुछ इकट्ठे होने लगता था.फिर अचानक इनके बीच अपरिचय की दीवार खडी हो जाती थी।फिर ये एक दूसरे को नमस्ते तक नही कहते थे।ऐसी दोस्ती के बनने और टूटने को मै कई वर्षो से देख रहा था।पर राईनर और स्टीव की दोस्ती अभीं भी कायम थी।आये दिन इन दोनो परिवारों का खाना होफ मे ही समवेत होता था।
राईनर की बेटियॉ बड़ी हो चली थीं।गाबी के चौबीस घन्टे बस उन्ही की चौकीदारी मे बितते थे।वो खुद बर्लिन मे पैदा और बड़ी हुई थी।उसे हर किस्म और उम्र के भेड़ियों की पहचान थी।खतरा वो दूर से ही सूॅघ लेती थी।अपनी बेटियों के मामले मे उसे किसी पर भरोसा न था.यहॉ तक कि अपने बाप पर भी नही।
सान्ड्रा थोड़ी चंचल थी।मॉ के मना करने के बावजूद वो आए दिन मुझे टोकती थीःकल तुम्हारी रसोई की खिड़की से बड़ी अच्छी खूशबू आ रही थी।कल शाम को कौन सा खाना बनाया था!मुझे खाने पर क्यों नही बुलाया!
अब मै उससे क्या कहता!अगली बार तुम्हे जरूर बुलाऊॅगा कहके आगे बढ जाता था।
राईनर के परिवार मे गर्म खानों का जैसे कोई रिवाज ही न था।पूरा परिवार ब्रेड.सौसेज.चीज़.जेलियों या ऐसी ही दूसरी चीजों पर जी रहा था।मुझे सान्ड्रा का टोकना बन्द होने का नाम ही न ले रहा था।मुझे एक उपाय सूझा।अब मै जब भी कोई खाना बनाता था तो थोड़ा ज्यादा बना लेता था और एक दोने मे खाना भर कर गाबी को दे आता था।दोना वापस करने गाबी ही आती थी.पर दोना खाली नही होता था।कभीं वो चाकलेटों से तो कभीं पेस्ट्रियों से भरा होता था।गाबी को मै मना न कर पाता था.ठीक वैसे ही जैसे वो मुझे मना न कर पाती थी।
इस वर्ष बर्लिन को ठंढ ने अगस्त की शुरूआत मे ही धर दबोचा।होफ का जीवन जुलाई के अन्त मे ही निष्प्राण हो चला था।काम से वापस आने के बाद मुझे सैकड़ों लोगों से नमस्ते बंदगी नही करनी पड़ती थी।
सितम्बर शुरू हुआ ही था कि यहॉ के लोगों को न्यूयार्क के ट्रेड सेंटर और पेन्टागन के कांड और अमेरिका की अफगानिस्तान पर हमले की तैयारियों ने ऐसा टेलीविजन से चिपकाया कि इनका सड़कों पर आना तक बन्द हो गया।फिर इन्हे अपनी मुद्रा से भी तो विदा लेना था।टेलीविजन के सारे प्रोग्रामो पर अमेरिकनों की देशभक्ति उनके आपसी सहयोग और समझ के गीत बुलन्दी से गाए जा रहे थे।आने वली नई मुद्रा यूरो की सार्थकता और उसके आने के फायदों पर भी हर दिशा से प्रकाश डाला जा रहा था।
बर्लिन का तापमान पॉच और माईनस दस के बीच झूल रहा था.पर बर्फ अभी तक न गिरी थी।दिसम्बर का महीना चल रहा था।लोगबाग भी ओसामा बिन लाडेन का नाम सुन सुन के थक गए थे और अपने घरों मे जर्मन मार्क का एक एक नोट और सिक्के ढूॅढने मे लग गए थे।आखिर कुछ दिनो के बाद क्रिसमस का त्यौहार जो आने वाला था और उसके चन्द दिनो के बाद सिल्वेस्टर भी।जर्मन मार्क को अपना मूल्य फरवरी के आखिरी तक न खोना था.पर सभी उससे विदा लेने की जैसे ठान चुके थे।खर्च कर मारो अपने आखिरी मार्क वरना कुछ ही दिनो मे ये रद्दी कागज हो जाने वाला है।
इस वर्ष ईश्वर इनके साथ था।एक्समस पर उसने दबा के इनकी भूमि पर बर्फ बरसाया और सिल्वेस्टर तक उन्हे न समेटा।
बाईस दिसम्बर को मुझे सिमोने बर्फ से नहाये होफ मे हमारे ब्लॉक की ओर आते दिखी।उसकी हॉथों मे रैप किया एक वाईनाख्ट स्टैर्न का पौधा था.जो वो राईनर को देने आ रही थी।
तेईस दिसम्बर को मुझे एक कारोलेविच की एक हायर्ड ट्रक बिरगिट के घर के सामने खड़ी दिखी जिसमे पता नही कौन कौन से सामान लादे जा रहे थे!
फिर आया तीन जनवरी और बुद्धवार की एक शाम.अचानक मेरे दरवाजे की कौलबेल बजी।
दरवाजे पर राईनर खड़ा था.एक काली जीन्स और एक काली फ्लानेल की कमीज पहने जो वो अपने पैंट मे उटपटांग ढंग से घूसेड़े हुए था।उसकी दाढी मूॅछ बेतरतीब ढंग से बढी हुई तो थी ही.ऑसुओं से भी सनी हुई थी
ःमुझे तुमसे कुछ बातें करनी है।तुम्हारे पास मेरे लिए थोड़ा समय है!
ःहॉ हॉ क्यों नही! कहकर मैने अपने मकान की चाभी जेब मे डाली.दरवाजा भेंड़ कर बन्द किया और राईनर के पीछे चल पड़ा।
ड्राईन्गरूम मे एक भद्दा सा सोफा पड़ा हुआ था जिसके सामने की मेज पर एक बड़ा सा ऐशट्रे सिगरेटों के किपों से भरा पड़ा था।मेज पर एक प्लास्टिक का झोला उॅठगा पड़ा था जो बीयर के कैनो से भरा पड़ा था।ड्राईन्गरूम के दरवाजे पर ही प्लास्टिक के तीन बड़े बड़े झोले बीयर के खाली कैनो से भरे पड़े थे जिनके मुॅह तो बन्द थे.पर उनसे एक बार टकराने के बाद ही मुझे पता लग गया था कि इनमे सिर्फ बीयर के खाली कैन्स हैं।
मै चुपचाप राईनर के बगल मे जा कर बैठ गया
ःमेरे बीस वर्षो की कमाई गाबी तो मुझसे छीन कर ले ही गई.साथ साथ मुझे कर्ज मे भी डूबो गई।बेटियॉ भी हॉथ से गई।अब ये चार कमरों का

खाली मकान मेरे पास है। ये कब तक मेरे पास है.ईश्वर ही जानता है। आज उसके वकील का मुझे पहला पत्र मिला है जिसमे मुझ पर शरावी होने का लांक्षन लगाया गया है और मुझसे तलाक मॉगा गया है। मुझे गावी को खो देने का दुख नही है पर वेटियों मे मेरे प्राण वसते हैं प्रमोद। उन्हे मै खो नही सकता। तुम जो सामने कार्टोन्स देख रहे हो.वे सब के सब उनके दिये तोहफों से भरे हैं। उनका दिया एक एक तोहफा मैने आज तक सम्हाल कर रखा है। सड़कों पर पड़ी कीलें.किसी कागज पर खीची दो टेढी लाईनें.किसी डिब्वे का ढक्कन.जो कुछ भी उन्होने ला कर मुझे दिया .मैने उन्हे सम्हाल कर रख लिया। मुझे शरावी करार देते हुए गावी मुझसे मेरा सोर्गे रेख्ट भी छीन लेना चाहती है और मेरे अपनी वेटियों से मिलने पर भी कानूनी पावन्दी लगाना चाहती है. कह कर राईनर बच्चों की तरह फूट फूट कर रोने लगा।

मै भी उसे अव कौन सी सान्तवना देता!

जो खेल राईनर और गावी के वीच शुरू होने वाला था.उसमे गावी की जीत ही जीत थी। राईनर की हर तरह से हार थी। जर्मन समाज और कानून दोनो गावी के पक्ष मे थे।

राईनर थोड़ा सहज हुआ

ःमेरी वदकिस्मती तो मेरे पैदा होते ही शुरू हो गई थी। मॉ को सुवह से शाम तक पीने और मेरे पिता से कलह करने से फुर्सत ही न थी। पिता की कमाई और दूसरे सरकारी सहायता से आए पैसे वो दारू मे उड़ा देती थी। मेरे पिता ने वस मुझे चलना सिखाया फिर वो लापता हो गए.पर मेरी मॉ को मर्दो की कभीं कमी न रही। मेरे सर पर भी वापों का साया वना रहा। वीयर का स्वाद तो मै अपने वचपन मे ही जान गया था।

जव मै चौदह वर्ष का था.तव मैने अपना घर छोड़ दिया और अपने एक दोस्त के संग रहने लगा। क्वायेत्सवेर्ग मे उसके पास एक कमरे का मामूली सा मकान था.विना किसी हिटिंग सिस्टम के। कोयले के व्रिकेटस से कमरा गर्म करना पड़ता था। टवायलेट भी वाहर सीढियों पर था।

मै ज्यादा पढ लिख भी न पाया। सातवीं क्लास मे मै दो वार फेल हुआ और मुझे स्कूल से निकाल दिया गया। मेरी उम्र कम थी जिसकी वजह से कोई पक्की नौकरी मुझे नही मिल सकती थी.पर इधर उधर छोटे मोटे काम मिल जाते थे। कमरे के किराये का आधा मुझे अपने दोस्त को देना पड़ता था। इसी तरह मैने अपने पॉच वर्ष गुजारे। मेरे पीने पिलाने का दौर क्वायेत्सवेर्ग मे शुरू हो गया था।

भाग्य से मेरी मुलाकात एक सज्जन से हुई जिनकी मदद से मुझे मेरिन्गडाम के कव्रगाह मे माली की पक्की नौकरी मिल गई। ये सज्जन हमारे फोरअरवाईटर थे.पर पीने पिलाने के एक नम्वर के शौकीन थे। दुकानों के खुलते ही आपस मे किये गए चन्दों से वाईनव्रान्ड या कार्न की वोतलें और वीयर कव्रगाह मे आ जाती थी। कव्रगाहों मे मालियों के लिए काम भी कितना होता है!दिन भर किसी वर्च के नीचे हम वैठ कर दारू पीते रहते थे। मेरे फोरअरावाईटर ने मेरे लिए एक कमरे के मकान का भी वन्दोवस्त कर दिया था.जो उनके मकान के करीव ही टुल्पेनस्ट्रासे पर था। अव मै उनके घर भी जाने लगा। ये गावी उन्ही की वेटी है। ये थी तो मुझसे चार वर्ष वड़ी.पर इसे देखते ही मै अपना दिल दे वैठा। गावी को दोस्तों की कमी न थी। मेरे लिए उसके पास समय न था। कभीं कभार मेरे संग वेगोनियन प्लात्स के किसी वैंच पर वैठ कर फिर दूसरों तीसरों के संग चल देती थी। जितने भी दोस्त इसके पास थे.सवों के पास अपनी अपनी गाड़ियॉ थी।

मै रोजाना इसके पिता के संग हिन्डेनवुर्गडाम के एक वार मे जाता था। रोज ही रात के वारह वज जाते थे। गावी की मॉ एक घरेलू और अनपढ औरत थी और अपने पति के सामने उनका कोई जोर न चलता था। जितने भी पैसे उन्हे अपने पति से मिल गए.उससे वो घर का खर्चा चलाती थीं। वो मुझे अपने सगे वेटे की तरह मानती थीं। उन्हे पता था कि मै गावी को चाहता हूँ पर गावी पर उनका कोई जोर न चलता था।

अकस्मात गावी ने अपने दोस्तों से मिलना जुलना वन्द कर दिया। एक साथ हम सभी चौंके। दिन भर वो अपने कमरे मे पड़ी रहती थी। हम सभी का ये ख्याल था कि इस उम्र मे तो दिल का टूटना और जूटना तो चलता ही रहता है। समय के साथ सव ठीक हो जाएगा।

एक दिन वार मे विना किसी लाग लपेट के गावी के पिता ने मुझसे पूछाःराईनर तुम गावी से शादी करोगे!

मेरी तो वोलती ही वन्द हो गई। अपने कानो पर विश्वास तक न हुआ। अन्धे को और क्या चाहिये दो ऑखों के सिवाय। मेरी तो हॉ ही थी.जो ये भी जानने के वाद न टूटी कि गावी को गर्भ ठहर गया है। किससे!ये उसे पता न था।

गावी से मेरी शादी हो गई। हम इस मकान मे आ गए। सिमोने मेरी वेटी नही है लेकिन मैने उसमे और सान्द्रा मे कभीं कोई भेद न जाना। जो भी मेरी आमदनी थी.उससे मैने गावी को एक रानी और अपनी वेटियों को राजकुमारियों की तरह रखा। काम पर मैने ओवरटाईम लगाए.वीकएन्ड पर काम किये पर इन्हे किसी वात की कोई कमी न होनी दी।

दुख वस मुझे एक वात का रहता था कि इन सारी वातों के वावजूद गावी का गैरों से मिलना वन्द न हो सका। ये मुझसे छुपा न था। मै अपने परिवार का टूटना नही देख सकता था। गावी को समझा समझा कर मै हार गया.पर मुझसे उसका वेग न रोका जा सका। मै उसके सामने रोया गिड़गिड़ाया.नशे मे डूवा। कई दिनो तक भूखे विस्तर पर पड़ा रहा। एक वार तो उसके सामने चाकू से अपने दॉई कलाई की नसें भी काट डालीं पर वो निर्मम वनी रही।

ःपता है तुम्हे अव वो किसके संग है!

मैने ना मे गर्दन हिला दी।

ःस्टीव के संग।

ये मेरे लिए इतना अप्रत्याशित था कि एक वार मुझे राईनर के कहे पर विश्वास तक न हुआ।

ःतुम्हे मेरा विश्वास नही है! तुम जव चाहो.जाके गावी का कौल वेल दवा दो। दरवाजा वही कमीना खोलेगा। उसकी नजर गावी पर तो थी ही। वो मेरी वेटियों को भी नही छोड़ेगा। अपनी दो सगी वेटियों को लात मार कर अव वो मेरी वेटियों पर अपने वाप का प्यार लुटा रहा है। उसकी अपनी वेटियॉ विरगिट के मॉ वाप के संग रह रही हैं। और विरगिट क्या कर रही है!खुल्लम खुल्ला रंडीखाना खोले वैठी है।

ःजव मुझे गावी का स्टीव के साथ रहने का पता चला तो मैने उसी शाम घर पर रसोई का एक वड़ा सा चाकू लिया और अपने पेट मे पूरी ताकत से घोंप लिया। पता नही मेरे पड़ोसी आल्टरमन को कैसे पता चल गया!उन्होने फोन कर के फौयरवेयर वुलवा लिया। मेरे घर का दरवाजा तोड़ कर वो मुझे तुम्हारे अस्पताल मे दाखिला करवा आए। तीन दिन मै जीवन और मौत के वीच झूलता रहा.पर मुझे वचा लिया गया। मै वहॉ ग्यारह दिन रहा.पर मुझसे मिलने कोई भी न आया। न तो गावी और न मेरी वेटियॉ।

राईनर घिघ्यिॉ वॉधे रोये जा रहा था। वड़े वुझे मन से मै वापस घर आया।

कई दिनो तक मै राईनर और गावी मे उलझा रहा। राईनर का कहा एक भी शव्द झूठ न था। इसके समानान्तर गावी का स्टीव के संग रहना भी

एक सत्य था। वो राईनर के शराब पर सारा दोष नही मढ सकती थी। स्टीव भी तो शराब पीता था।
पता नही वो राईनर को इतनी कड़ी सजा क्यों दे रही थी!राईनर के प्रति वो क्यों इतनी आक्रामक हो चली थी!
इस परिवार के विघटन का मूल कारण न तो शराब हो सकता था और न ही गावी की जीवनचर्या। सत्य और कहीं राईनर के शराब और गावी के जीवनचर्यायों के बीच मध्य मे था. ये मेरा मन कहता था।
एक तूफान के आने और जाने मे ज्यादे वक्त नही लगता. वक्त लगता है उसकी की गई तबाहियों से उबरने मेः
राईनर से उसका टैक्स कार्ड तीन ले लिया गया। जर्मन सरकार उसकी कमाई का एक बहुत बड़ा भाग टैक्स के रूप मे वसूलने लगी। पन्द्रह सौ मार्क के ऊपर जो कुछ बचता था. वो गावी अपनी बेटियों के साथ तसीलने लगी। जर्मनी मे परिवारों के टूटने की सजा बिना दोष देखे सिर्फ मर्दो को दी जाती है। उन्हे ही नंगा किया जाता है।
राईनर को अपना मकान छोड़ना पड़ा। कहॉ से भरता वो इसका किराया!
सामान के नाम पर भी उसके पास कुछ न था। उसने अपने कपड़े एक बैग मे ठूॅसे और अपने एक पियक्कड़ दोस्त के एक कमरे के तंग मकान मे चला गया। जहॉ से उसकी जिन्दगी की शुरूआत हुई थी. वहीं गावी ने उसे पहुॅचा दिया था।
बचा स्टीव!
जिस डेटलेफ की सेवा से बिरगिट ने उसे डाकियागिरि दिलवाई थी. उसी की सेवा से उसकी डाकियागिरि पलक झपकते छिनवाई!गावी ने इस बेरोजगार को तीन महीने तक झेला फिर अपने मकान से लात मार कर निकाल दिया। रोता कलपता स्टीव बिरगिट के पास आया। दरवाजा खोलने के नाम पर बिरगिट ने बस अपने रसोई की एक खिड़की ही खोली और वो भी एक तसला खौलता पानी उस पर फेंकने के लिए।
गावी और बिरगिट ने अपने पतियों से तलाक़ ले लिया। अब इन दोनो के पास कुछ ज्यादे ही स्वछन्द जीवन है।
जैसा कि कहते हैं कि एक तूफान की लाई गई तबाहियॉ सत प्रतिशत हटाई नही जा सकती। कहीं न कहीं मलवों का छोटा बड़ा ढेर वर्षो तक यहॉ वहॉ देखा जा सकता है।
बिरगिट की बेटियों का सोर्गे रेख्ट कानूनन बिरगिट के मॉ बाप को मिला और सिमोने और सान्द्रा का गावी को। इसी तहत एक बड़ा ही कड़वा सत्य उभर कर सामने आया। राईनर के वकील की जिरह सुनने के बाद महिला जज को राईनर को भी सोर्गे रेख्ट देने मे कोई आपत्ति न थी कि अचानक सिमोने उठ खड़ी हुईःपिछले ग्यारह वर्षो से मै राईनर के छेड़छाड़ों को झेलती आ रही हूॅ। वो एक वहशी और कमीना इन्सान है। उसे सिर्फ उसकी शराब रूलवाती है और उससे मीठे बोल बुलवाती है। मै उसकी सौतेली बेटी हूॅ. पर सान्द्रा तो उसकी अपनी है। जो मै कह रही हूॅ वो सान्द्रा भी अपने लिए दुहरा सकती है।
हॉल मे बैठे लोग एक साथ चौंक पड़े। मिनटों वहॉ एक सन्नाटा सा छाया रहा। मै भी वहॉ बैठा था।
इसके बाद न तो राईनर से एक शब्द बोला गया और न ही उसके वकील से।
राईनर के शराब और गावी की जीवनचर्यायों के मध्य यही एक पंकीला सत्य था जो वाकई आज के दिनों मे भी जर्मनी मे पंकीला और अपच्य है। शेष विशेष सुन्दर या असुन्दर कहने को यहॉ कुछ खास नही बचा है।
मै मलवों के जिन ढेरों की बात कर रहा था. वो आज भी सिमोने और सान्द्रा मे उनके बाईसवें और बीसवें वर्ष मे देखा जा सकता है। मेरे हॉथों का बनाया खाना उन्होने वर्षो खाया. पर मिलने पर वो मुझे भी अपनी हॉथें देने से घबराती हैं। गावी के कहने पर बस एकाध उॅगलियॉ बढा देती हैंः

प्रमोद कुमार सिंह